2018

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
इतिहास	1 1 0	हिन्दी

... तारे के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का ... क्रमांक A- 1118197

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

-	2	8	2	5	3	6	9	7	3

शब्दों में

-	दो	आठ	दो	पाँच	तीन	छः	नौ	सात	तीन

उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 03 शब्दों में तीन

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 09

ग :- परीक्षा का दिनांक 14 03 18

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S.S.C. C.NO.-252003

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
शर्मा	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्रापट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	...क्षर एवं निर्धारित मुद्रा
	... सिंह सिकरवार वरिष्ठ अध्यापक ...

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 अंक = कुल अंक

EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न -(1) का उत्तर

(अ) गुलाम वंश

(ब) ए. ओ. ह्यूम

(स) विवेकानंद

(द) सिराजुद्दौला

(इ) शिवाजी

प्रश्न (2) का उत्तर

स्तम्भ (अ)		स्तम्भ (ब) उत्तर
(i) कालिदास	–	मेघदूत
(ii) मुहम्मद-बिन-तुगलग	–	राजधानी परिवर्तन
(iii) वालमीकि	–	रामायण
(iv) बाणभट्ट	–	हर्षचरित
(v) गौतम बुद्ध	–	लुम्बिनी

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(3) का उत्तर

(i) रामगढ़ (से)

(ii) सूरत (1907)

(iii) महात्मा गाँधी

(iv) अकबर

(v) गुलबदन बेगम

B

S

E

प्रश्न-(4) का उत्तर

(i) असत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

5 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 5 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(5) का उत्तर

(i) ~~रजिया~~ रजिया सुल्तान

(ii) जहाँगीर के

(iii) ~~शाह आलम~~ शाह आलम

(iv) 1906 ई॰ में

(v) बंकिमचन्द्र चट्टोउपाध्याय

प्रश्न- (6) का उत्तर

इलाहाबाद की संधि 1765 में शाह आलम व शुजाउद्दौला की अंग्रेजों ~~की~~ के साथ बंकसर युद्ध के बाद संधि हुई थी।

प्रश्न-(7) का उत्तर

पानीपत का प्रथम बाबर और ~~इब्राहीम~~ इब्राहीम लोधी के मध्य 1526 ई॰ में पानीपत के मैदान में लड़ा गया था।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न- (8) का उत्तर

पल्लव वास्तुकला की महेन्द्र शैली की विशेषताएँ निं०लि है -

(1) इस शैली का विकास ~~महेन्द्र~~ महेन्द्रवर्मन प्रथम के शासन काल के होने के कारण इसका नाम महेन्द्र शैली पड़ गया।

(2) इस शैली के अन्तर्गत स्तम्भ युक्त मण्डपों का निर्माण किया जाता है।

प्रश्न- (9) का उत्तर

जैन धर्म के त्रिरत्न निम्न प्रकार से थे -

(1) सम्यक् दर्शन

) सम्यक् ज्ञान

(3) स क् (चरित्र) चरित

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न – (10) का उत्तर

प्रागैतिहासिक काल –

"जिस काल का कोई भी लिखित वर्णन नहीं प्राप्त नहीं होता है उसे प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है।"

जब जब लिखने की कला से अनभिज्ञ था तब भी वह जीवन बिताता था

प्रश्न – (11) का उत्तर

मुगलों की "दहसाला बन्दोबस्त" व्यवस्था की विशेषताएँ निम्नलि थी –

(1) इस व्यवस्था के अन्तर्गत भूमि की माप को रस्सियों रस्सीयों के स्थान बाँस से मापा जाने लगा था तथा बाँस के बीच - बीच मे लोहे के छल्ले लगे होते थे।

(2) इस व्यवस्था मे भूमि की इकाई को बीघा माना जाता था तथा भूमि की बीघा इकाई की माप 60 X 60 = 3600 वर्ग मील होती है।

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECON

प्रश्न क्र.

(9) इस व्यवस्था में भूमि के माप के गज-ए-सिकन्दरी के स्थान गज-ए-इलाही का प्रयोग किया जाने लगा।

प्रश्न-(12) का उत्तर

मुगल साम्राज्य के पतन के कई कारण थे जिनमें से प्रमुख कुछ निम्न प्रकार है—

(1) साम्राज्य की विशालता—

मुगलों के औरंगजेब तक आते-आते साम्राज्य अत्यंत विशाल हो चुका था तथा इतने बड़े साम्राज्य पर नियंत्रण रख पाना अत्यन्त कठिन हो रहा था जो मुगल ~~सा~~ साम्राज्य के पतन का कारण बना।

(2) अयोग्य उत्तराधिकारी—

औरंगजेब के बाद ऐसा कोई भी सुयोग्य शासक नहीं हुआ जो साम्राज्य का नियन्त्रण स्थापित कर सके। अतः अयोग्य व निर्बल उत्तराधिकारी मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बने।

B
S
E

प्रश्न क्र.

(3) उत्तराधिकारी नियमों का अभाव-

मुगल साम्राज्य में उत्तराधिकारी नियमों का अभाव था तथा सम्राट की मृत्यु के बाद स्वज पुत्रो में ही संघर्ष प्रारम्भ हो जाता था।

अतः उत्तराधिकारी नियमो का अभाव भी मुगल शासन के पतन का कारण बना।

प्रश्न-(13) का उत्तर (अथवा)

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के तहत महात्मा गांधी जी द्वारा निम्न मांगे की गई जो इस प्रकार है-

(1) रुपये की बाह्य दर 1 शिलिंग 4 पैसे की जाय।

(2) जिस व्यक्तियों के खिलाफ हिंसा, हत्या आदि का कारण नहीं या आरोपनहीं है उन्हें कारागारो से मुक्त किया जाए।

(3) नमक को बनाने के लिए कर समाप्त किया जाए।

B S E

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(14) का उत्तर (अथवा)

4 जुलाई 1947 को अंग्रेज सरकार ने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित का प्रस्ताव रखा तथा 18 जुलाई 1947 ई० को इसे लागू कर दिया जिसकी प्रमुख धारायें निम्न थी -

(1) भारत (पाकिस्तान) का विभाजन-

इस अधिनियम के तहत भारत का विभाजन पाकिस्तान बना दिया गया तथा 15 अगस्त 1947 के बाद से भारत व पाकिस्तान दो अधिराज्य बना दिये गये।

(2) भारत मंत्री पद की समाप्ति-

इस अधिनियम के द्वारा भारत मंत्री के पद को समाप्त कर दिया गया व भारत व पाकिस्तान पर ब्रिटिश प्रभुत्व समाप्त हो गया।

(3) संविधान सभाओं को सत्ता अहस्तांतरण-

ब्रिटिश सरकार ने पाकिस्तान व भारत की संविधान सभाओं को सत्ता प्रदान कर दी।

B
S
E

11 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 11 के अंक = कुल अंक

प्रश्न-(15) का उत्तर

म.प्र में साँची स्तूप →

मध्यप्रदेश के रायसेन जिले से 25 किम की दूरी पर दक्षिण दिशा मे साँची स्थित है।
इस स्तूप का निर्माण मुख्य रूप से मौर्य सम्राट अशोक ने करवाया था।
इस स्तूप के चारो ओर दो प्रदक्षिणा पथ है इस स्तूप के चारो सुन्दर वेदिकाऐं अवस्थित है।
इस स्तूप मे दो छोटे व एक बड़ा स्तूप निर्मित किया गया है।
इस स्तूप मे मे जो बड़ा स्तूप है उसे महास्तूप कहा जाता है जिसमे महात्मा के शरीर को रखा गया था तथा द्वितीय स्तूप मे अशोक के समय के बौद्ध प्रचारको के शरीर को रखा गया है तथा तृतीय मे महात्मा बुद्ध के दो शिष्यों के शरीर को रखा गया है।

इस स्तूप को विशालता शुंग काल में मिली। इस स्तूप को शुंग काल मे लाल बलुआ पत्थरो से बनवाया गया।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

इस स्तूप की दीवारो पर महात्मा बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित सजीव मूर्तियाँ व चित्र उकेरे गये।

जो महात्मा बुद्ध व उस काल की गाथा को सहज ही बताते है।

प्रश्न - (16) का उत्तर (अथवा)

राम कृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द जी ने थी इस के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलि है -

(1) एकेश्वरवादीता की स्थापना -

इस मिशन का मुख्य उद्देश्य था कि लोगों के आपसी मतभेद, धार्मिक भावना तथा धर्मों के प्रति भेदभाव की भावना से ऊपर उठकर "ईश्वर एक है" इस सिद्धान्त को बढ़ाना था।

(2) सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात -

इस मिशन का एक उद्देश्य यह भी था कि सामाजिक कुरीतियाँ जैसे सती प्रथा,

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

बाल विवाह, कन्या वध प्रथा आदि का विरोध कर इनको समाप्त करना था।

(3) राष्ट्रवादिता की भावना को ~~जन्म~~ पैदा करना -

इस मिशन का एक उद्देश्य यह भी था कि ब्रिटिश शासन के विरोध विरुद्ध लोगों मे अपने राष्ट्र के लिए प्रेम की अलग जगाना था।

(4) सामाजिक जागृति को जगाना -

इस मिशन का एक उद्देश्य है भी था कि लोगों मे समाज व राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना को बढाना था तथा हिंदु धर्म तथा संस्कृति की पुनः स्थापना करना था।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(17) का उत्तर (अथवा)

भारत में पुर्तगालियों के पतन के कारण निं॰लि॰ हैं -

(1) अयोग्य उत्तराधिकारी -

अलबुकर्क की मृत्यु के बाद पुर्तगाल गवर्नर अयोग्य व निर्बल थे वे अपने निजी स्वार्थों में लगे रहते हैं जिसके कारण जिसके कारण जनता का उन पर विश्वास उत्पन्न नहीं हो सका।

(2) भ्रष्ट्रनीति -

पुर्तगालियों द्वारा व्यापार नीति जो तैयार की गयी थी वह भ्रष्ट्र थी। पुर्तगालियों अधिकारियों के वेतन अत्यन्त कम थे जिसके कारण सर्वत्र भ्रष्ट्राचार का बोलबाला था तथा भ्रष्ट्र कर्मचारियों से योग्य शासन करना व्यर्थ था।

(3) ब्राजील की खोज -

पुर्तगालियों ने दक्षिण अमेरिका में में एक नये उपनिवेश की खोज

B
S
E

क्र.

लिया था तथा उन्होंने भारत की अपेक्षा नये उपनिवेश ब्राजील पर अधिक ध्यान दिया। जो उनके पतन का कारण बना।

(4) सीमित साधन-

पुर्तगालियों के पास भारत जैसे साम्राज्य को जो बहुत विशाल था उस पर नियन्त्रण रखने के लिये पर्याप्त साधन नहीं थे तथा जब उनका मुकाबला मुगलों, मराठो व अंग्रेजों से हुआ तो वे अपने आप को असहाय समझने लगे।

जो पुर्तगालियों के भारत मे पतन का कारण बना।

प्रश्न-(18) का उत्तर

शिवाजी एक छोटे से जागीरदार के पुत्र थे अतः उन्होंने सबसे पहले अपने लक्ष्यों को निम्न प्रकार से निर्धारित किया था।

जो निम्न प्रकार से है—

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(1) पूना मे स्वतन्त्र राज्य की स्थापना-

शिवाजी एक छोटे से जागीदार के पुत्र थे। उनके साधन सीमित थे वे पूना व इसके आस-पास के जागीदार थे। अतः उन्होने सर्वप्रथम लक्ष्य अपनी जागिर को मजबुत कर उसके स्वामी बनने का था।

B
S
E

(2) हिन्दू धर्म, ब्राह्मण व गौ रक्षा करना-

शिवाजी का जन्म एक हिन्दू परिवार मे हुआ अतः वे हिन्दू धर्म, संस्कृति आदर्शों के प्रति पूर्ण सजग थे जिसके कारण उन्होने हिन्दु धर्म ब्राह्मण व गौ रक्षा को अपना लक्ष्य बनाया।

(3) मुगलो के अधीन न रहना-

शिवाजी मुगलों की क्रूरता, निर्दयीता व पक्षपात भाव के कारण उनके हृदय मे मुगलो के प्रति घृणा भाव उत्पन्न हो गया था तथा वे अन्य मराठे सरदारो के समान मुगलो के अधीन रहकर जीवना नही चाहते थे।

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHY

(4) हिन्दू धर्म की पुर्नस्थापना-

शिवाजी मुगलो के विरुद्ध मैदान हिन्दू धर्मघोष लेकर खड़े हुऐ।

उन्होंने मुगलों के विपक्ष में हिन्दू धर्म व ~~धार्मिक~~ नीतियों का सहारा लिया।

प्रश्न-(19) का उत्तर (अथवा)

चोल शासकों की स्थानीय स्वशासन की प्रमुख विशेषताऐं नि.लि. थी-

(1) चोल काल में राज्य की सबसे छोटी ईकाई गाँव होती है। व गाँव कर वसूली का कार्य गाँव की पंचायतो द्वारा किया जाता था।

(2) चोल काल में गाँवो की सभा को दो भागो में बाँटा गया था पहली जो राजा द्वारा किसी विद्वान को उपहार स्वरुप दी जाती थी उसे चतुर्वेदिक कहा जाता था जिसकी ~~समिति~~ समिति सभा कहा जाता था तथा जो सामान्य गाँव होते थे उनकी समिति उरार कतंया गाँव उर कहा जाता था।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(3) चोलकालीन प्रशासन व्यवस्था में सभी कार्य जनता के हित को देखकर किये जाते थे।
गांव पंचायतों द्वारा अनेक प्रकार के कर जैसे - कारीगर, बुनकर सुनार आदि लोगों से कर लिये जाते थे जिनसे राजकीय कार्य किये जाते है।

(4) चोलकालीन प्रशासन व्यवस्था के अन्तर्गत के ग्राम पंचायतो की सभायें मन्दिरों व पेड़ों की छाय मे सम्पादित की जाती है।

(5) ग्राम व्यवस्था का ग्रामणी अधिकारी होता था।

प्रश्न - (20) का उत्तर

वैदिक काल के ऋषि मुनियों मानव जीवन को चार भागों में बाटा था जो निम्न प्रकार थी -

(1) ब्रह्मचर्य आश्रम - जीवन के प्रारम्भिक 25 वर्षों तक गुरु के आश्रम में रहकर विद्या

B
S
E

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

अर्जित करना था तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य को पालना पड़ता था।

(2) गृहस्थ आश्रम -

जीवन के अगले 25 वर्ष अर्थात 25 वर्ष से 50 वर्ष तक व्यक्ति को गृहस्थ आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत रहना पड़ता था। जिसमे व्यक्ति परिवार के साथ रहकर धन कमाता था तथा अतिथियों का स्वागत करता था।

(3) वानप्रस्थ आश्रम -

इस आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत जीवन के अलगे 25 वर्ष से वान प्रस्थ आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति को रहना पड़ता था। इस आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति 50 वर्ष से 75 वर्ष की आयु बिताता था। इन आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति अपने को छोड़कर त्याग तथा तपस्या करता था।

(4) सन्यास आश्रम -

इस आश्रम के अन्तर्गत व्यक्ति अपनी आयु अलगे 25 वर्ष अर्थात् 75 वर्ष से 100 वर्ष

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

तक की आयु व्यक्ति सन्यास आश्रम मे बिताता था। वह परिवार तथा पत्नी बच्चो से नाता छोड़ देता था तथा पूर्णतया ईश्वरीय भक्ति मे लीन हो जाता था।

इस प्रकार मनीषी आर्यो ने जीवन को चार भागो मे बाँटकर मानव जीवन को सफल बनाने का प्रयास किया था।

प्रश्न -(22) का उत्तर

अशोक एक महान विजेता, कुटनीतिज्ञ तथा धर्मपरायण व्यक्ति था।

उसे महान कहे जाने के प्रमुख कारण नि०लि० है —

(1) ~~आदर्श तथ~~ आदर्श तथा उच्चव्यक्तित्व —

अशोक के अन्दर एक महान प्रभावशाली कुशल प्रशासक, उदारता, अहिंसा, धर्मपरायणता, सहयोग, सद्भावना के भाव विद्यमान थे।

वह एक उच्च व्यक्तित्व तथा महान

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रशासक था।
अतः इन सब गुणों के कारण उसे महान कहा जा स्वाभिक था।

(2) महान विजेता -

अशोक एक महान विजेता था। वह जितना युद्धघोष मे प्रसिद्ध नही हुआ जितना वह धर्मघोष से प्रसिद्ध हुआ।
अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद युद्धघोष के स्थान पर धर्मघोष निकाले।
विश्व मे वही एकमात्र शासक है जिसने तलवार के ~~स्थान~~ स्थान पर अहिंसा व सत्य की नीतियो का प्रयोग किया।

(3) कर्तव्यनिष्ठ -

अशोक एक कर्तव्य निष्ठ शासक था वह जीवन का प्रत्येक क्षण अपनी ~~प्र~~ जनता के हित कार्यों मे लगाना चाहता था इसलिए उसने कहा था कि -
" मैं जो भी पराक्रम करता हूँ वो आपका मुझ पर जो ऋण है उसके मे वे पराक्रम करता हूँ।"

इस उक्ति से हम अशोक की कर्तव्यनिष्ठा जनता के प्रति जो उसमे थी उसे समझ सकते है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(3) कुशल प्रशासक –

अशोक एक कुशल प्रशासक भी था उसने राज्य का स्थायी रूप से निरक्षण करने के लिए राजुकओं की नियुक्ति तथा वह स्वयं भी जनता के बीच जाकर जनता के कष्टों का निवारण करता था।
उसके शासन मे जनता बहुत व समृद्धि पूर्ण थी।

(4) लोक कल्याण परायण शासक –

अशोक अपनी सभी कार्य अपनी जनता के हित को देखकर करता था।
इसके अतिरिक्त अशोक ने जनता के हित के लिए सड़कों का निर्माण करवाया, पेयजल की व्यवस्था की, सड़कों के दोनों ओर पेड़ लगवाये व सरायों की स्थापना की।

B
S
E

(23) [ ] + [ ] =

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 23 के अंक

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

क्र.

(5) प्राणी मात्र के प्रति प्रेम -

अशोक न केवल मानव जाति के ऊपर उदार दृष्टिकोण रखता बल्कि वह पशु, पक्षियों के ऊपर भी दया तथा उदार का भाव रखता था। अशोक ने अनेक पशु-पक्षियों के लिए औषधालयों का निर्माण करवाया। तथा पशु बलि पर भी रोक लगा दी।

अतः स्पष्ट विवेचन से स्पष्ट होता है कि अशोक एक महान शासक था।

प्रश्न - (23) का उत्तर

अलाउद्दीन खिलजी का मुख्य उद्देश्य था कि कम वेतन में अधिक सेना रखने के लिए उसने बाजार नियन्त्रण नीति बनाई जिसके लिए प्रमुख उसने प्रमुख कार्य किये -

(1) मूल्य नियन्त्रण व बाजार की स्थायी जानकारी -

अलाउद्दीन खिलजी ने जीवन से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण वस्तुओं का मूल्य निश्चित कर दिया तथा उसने कपड़ा,

प्रश्न क्र.

अनाज व जरूरती चीजों के मूल्य निश्चित कर दिये तथा इसके साथ-साथ बाजार के निरीक्षण के लिए उसने "शहना-ए-मण्डी" नामक अधिकारी की नियुक्ति की थी तथा उसकी सहायता के लिए बरीद नामक अधिकारी की नियुक्ति की थी।

तथा बाजार सम्बन्धी सभी सूचनाओं की रखा गुप्त रूप से जानकारी के लिए उसने मुनहियान नामक अधिकारी की नियुक्ति भी की थी।

B
S
E

(2) वस्तु की पूर्ति पर नियंत्रण —

अलाउद्दीन ने जीवन के सर्वप्रमुख अनाज की पूर्ति के लिए सरकारी अन्नभण्डार गृहों में अनाज की पूर्ति को बढ़ाने के लिए निर्देश दिये गये। जिसके लिए सुल्तान दोआब के किसानों से नगद कर के स्थान पर अनाज के रूप में कर लिये तथा किसानों के लिए यह निर्देश दिये गये कि वे मात्र अपने परिवार के लिए जितना उपयोगी अनाज आवश्यक है उतना ही लें।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 4 पृष्ठीय 2018

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
इतिहास	1 1 0	हिन्दी	14 03 18

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक C- 3244921

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 2 8 2 5 3 6 9 7 3

शब्दों में: दो आठ दो पाँच तीन छः नौ सात तीन

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा: HSSC C.NO.-252008

पर्यवेक्षक का नाम व हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक............तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

B S E

सुल्तान की इस आज्ञा के बाद जीवन उपयोगी अनाज की कभी भी कमी नहीं पड़ी।

(3) शहना-ए-मण्डी को अधिकार सम्पन्न बनाना –

सुल्तान ने शहना-ए-मण्डी को अधिकार सम्पन्न बनाने के लिए यह आदेश दिये कि वह भ्रष्ट व्यापारियों को पकड़े तथा उन पर मुकद्दमा चलाये तथा किसी प्रतिष्ठित व्यापारियों की जमानत पर छोड़ने का प्रावधान था।

पृष्ठ के अंकों का योग

(ग) वस्तुओं का उचित वितरण व्यवस्था -

अलाउद्दीन सुल्तान ने वस्तुओं के वितरण की भी उचित व्यवस्था की। तथा व्यापारियों के कोटे निश्चित कर दिये। किसान 10 मन से अधिक अनाज संग्रहित कर सकता था। तथा प्रत्येक व्यक्ति को प्रमाणित पत्र के आधार भी उपयोगी वस्तुऐ दी जाती थी।

(5) भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण तथा कठोर कानून व्यवस्था -

अलाउद्दीन खिलजी ने भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर कानून व्यवस्था की थी उसके एक आदेश के अनुसार " जो व्यापारि जितना कम तोलता है उसके शरीर से उतना ही मांस काट लेने के आदेश थे।

इस प्रकार बाजार नियन्त्रण व्यवस्था जनता को जीवन उपयोगी वस्तुऐं कम मूल्य पर मिलने लगी।

~~प्रश्न - क्र 21~~

प्रश्न-(21) का उत्तर

पुरापाषाणकाल व नवपाषाणकाल में प्रमुख अन्तर निंलि है-

पुरापाषाणकाल	नवपाषाणकाल
(1) इस काल के मानव के औजार, भद्दे बेडौल खुरदरे होते थे।	(1) इस काल के मानव के औजार चिकने, चमकदार व पॉलिशदार होते थे।
(2) इस काल के मानव को पशुपालन का ज्ञान नहीं था।	(2) इस काल के मानव को पशुपालन का ज्ञान था। वे कुत्ते, गाय बैल भैंस बकरी आदि को पालते थे।
(3) इस काल के मानव को कृषि का ज्ञान नहीं था।	(3) इस काल के मानव ने कृषि करना सीख लिया प्रमुख कृषि उपजें बाजरा, गेहूँ, मक्का आदि थी।
(4) इस काल का मानव जंगलों, गुफाओं में रहता था।	(4) इस काल के मानव घास फूस, मिट्टी पत्थर की सहायता से आवास बनाकर रहता

प्रश्न- (24) का उत्तर

शिवाजी की केन्द्रीय शासन व्यवस्था निम्न प्रकार थी

केन्द्रीय प्रशासन

(1) राजा -

राजा राज्य का प्रधान होता था अपनी इच्छा का मालिक होते हुए भी निरंकुश नहीं था तथा राजा राज्य की प्रजा के हित के लिए सभी कार्य करता था।

(2) अष्टप्रधान मंत्रिपरिषद -

शिवाजी को शासन में सहायता में सहायता करने के लिए एक आठ मंत्रियो के समिति होती थी जिसे अष्टप्रधान कहते थे। अष्टप्रधान के सभी मंत्री सेनापति को छोड़ ब्राह्मण होते थे।

(3) सेना व्यवस्था -

शिवाजी के सेना में 30000-40000 घुड़सवार की सेना तथा इससे कई अधिक पैदल सेना भी थी।

2018

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय | विषय कोड | परीक्षा का माध्यम | परीक्षा का दिनांक

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक C- 3244924

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 2 8 2 5 3 6 9 7 3

शब्दों में: दो आठ दो पाँच तीन छः नौ सात तीन

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC C.NO. 252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक ....तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

शिवाजी की सेना मे तोपखाना नामक एक अलग विभाग होता था।
सेना का प्रधान सेनापति था।

(4) राजस्व – शिवाजी की आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर था। सिपाही ने शिवाजी की राज्य मे चौथ व सारदेश प्रमुख कर थे जो विजित प्रदेशों पर लगाये जाते थे।

(5) न्याय व्यवस्था –

शिवाजी की न्याय व्यवस्था बहुत कठोर थी तथा न्यायधीशों की नियुक्ति राजा स्वयं करता था।
राजा सर्वोच्च न्यायधीश होता है।

BSE

पृष्ठ के अंकों का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

शिवाजी की कठोर न्याय नीति के अपराध कम होते थे।

शिवाजी के साम्राज्य मे जनता खुश व समृद्धि थी।

प्रश्न- (25) का उत्तर

19वी शताब्दी भारतीय इतिहास काल मे पुनर्जागरण की सदी कही जाती है।

पुनर्जागरण के प्रमुख कारण निम्नलि थे -

(1) पाश्चात्य साहित्य व शिक्षा -

पाश्चात्य शिक्षा व साहित्य ने भारतीय तथा खासकर शिक्षित भारतीय को अपने देश की संस्कृति व प्राचीनता से अवगत कराया। जिससे भारतीयो का मस्तिष्क तर्कपूर्ण बना और वे भारतीय समस्याओं के प्रति सजग हो गये तथा पुनर्जागरण के आन्दोलन चल पड़े।

(2) समाचारपत्र व पत्रिकाए –

समाचार पत्र व पत्रिकाओ ने ब्रिटिश अधिकारियो के भारतीय के प्रति व्यवहार से अवगत कराया जिससे भारतीय मे अपने देश के राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ।

(3) 19वी शताब्दी के धर्म सुधारको का प्रभाव –

भारतीय भूमि पर 19वी शताब्दी मे कई धर्मसुधारकों ने जन्म लिया जिन्होने भारतीय मे राष्ट्रीय प्रेम की भावना जाग्रत की। इन नेताओ मे प्रमुख राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक, दयानन्द सरस्वती आदि ने उल्लेखनीय योगदान निभाया।

(4) भारतीयो को विदेशी साहित्य से गौरव का ज्ञान –

भारतीयो को विदेशी शिक्षा व साहित्य से अपने भारत

की प्राचीन सभ्यता व गौरव का ज्ञान हुआ जिससे उनमे आत्महीनता के स्थान आत्मविश्वास की भावना जाग्रत जाग्रत हुई।

(5) विदेशी धर्म प्रचारको के ईसाई धर्म का प्रचार -

विदेशी धर्म प्रचारको ने भारत मे ईसाई धर्म का प्रचार किया तथा धन के लोभ मे हिन्दू व निर्धन शीघ्र गति से ईसाई बन रहे थे ऐसे मे भारतीय धर्म सुधारको की आँखे खुली तथा धर्म सुधार के आन्दोलन चल पड़े।

प्रश्न-(26) का उत्तर (अथवा)

'सविनय अवज्ञा आन्दोलन म०प्र० में'

भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा 26 जनवरी 1930 जब पूर्ण स्वाधीनता दिवस मनाने के बाद गाँधी जी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने के सभी अधिकार सौंप दिये गये। अतः गांधी जी ने 6 अप्रैल 1930 को नमक कानून दाण्डी में तोड़कर इस आन्दोलन की शुरुआत की।

'जिस दिन महात्मा गाँधी ने नमक कानून भंग कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया गया था उसी दिन मध्यप्रदेश में सेठ गोविन्द दास तथा द्वारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस एक जबलपुर में रानी दुर्गावती की समाधि पर इस आन्दोलन की शपथ के लिये ले जाया गया था।

इस आन्दोलन क मे कई लोगो ने भाग लिया जिनका जोश पराकाष्ठा पर था।

इस जूलूस मे द्वारकाप्रसाद मिश्र, सेठगोविन्ददास, सवाईमल जैन, सुभद्राकुमारी चौहान, नारायण दत्त तिवारी आदि लोगों ने ने इस आन्दोलन मे भाग लिया।

इस आन्दोलन के कारण जबलपुर मे शराबबन्दी व स्वदेशी आन्दोलन क तीव्र गति से चल रहे थे।

28 अप्रैल 1930 को

6 अप्रैल 1930 को एक सभा का आयोजन जबलपुर मे इस आन्दोलन को तीव्र गति प्रदान करने के लिए चलाया गया था।

28 अप्रैल 1930 को सेठ गोविन्ददास द्वारकाप्रसाद मिश्र, सुभद्राकुमारी चौहान, नारायण दत्त आदि बड़ी नेताओ को गिरफ्तार कर दिया गया था।

सरकार द्वारा इस आन्दोलन को

तीव्र गति से दमन किया गया लेकिन इस आन्दोलन मे म॰प्र॰ के लोगो ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

6 अप्रैल 1930 को सविनय अवज्ञा की बैठक के कांग्रेस द्वारा बम्बई मे की गई। जिसमे सविनय अवज्ञा आन्दोलन के साथ-साथ जंगल सत्याग्रह मध्य भारत मे चलाने का निर्णय लिया।

म॰प्र॰ मे जंगल सत्याग्रह को व्यापक रूप फैलाया। इस आन्दोलन मे बैतूल के घोड़ा डोंगरी के लोगो इस आन्दोलन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन भारत मे राष्ट्रीयता की भावना पैदा करने सक्षम रहा।